मैं.... और मेरी बाँसुरी

बचपन में मेरे परिवार में संगीत और भजन गान बहुत होता था । मेरी माँ अच्छी भजन गायिका थीं । क्योंकि वे खुद अपने बचपन में औपचारिक रूप में संगीत नहीं सीख सकीं। इसलिए चाहती थीं कि उनके बच्चे इस दिशा में ज़रूर आगे बढ़ें ।

मेरे बड़े भाई वेणु विनोद, जो मुझसे छह साल बड़े थे, ने सबसे पहले बाँसुरी सीखने का प्रयास किया । जब वे बोधन गाँव में हायर सेकण्डरी स्कूल में पढ़ रहे थे और स्काउट भी थे तब उन्होंने इसे बजाना सीखा । बाद में जब वे इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के लिए हैदराबाद चले गए तो उन्होंने क्रमबद्ध तरीके से कर्नाटक बाँसुरी बजाना सीखना शुरू किया । हैदराबाद में रेलवे में कार्यरत श्री टी.एस. चंद्रशेखरन उनके गुरू थे और वे स्वयं महान मास्टर श्री टी. आर. महालिंगम के शिष्य थे।

बोधन के हाई स्कूल में नौवीं कक्षा तक पढ़ चुकने के बाद मैं आगे की शिक्षा के लिए हैदराबाद चला आया । जब मैं बारहवीं कक्षा में था, 1962-63 के लगभग, तब मेरे भाई ने मुझे तबला सीखने पर ज़ोर दिया और मैंने एक साल तबला बजाना सीखा भी ।

एक साल तक तबला सीख लेने के बाद मेरे भाई ने मुझे अपने ही गुरू श्री टी.एस. चंद्रशेखरन के पास बाँसुरी वादन सीखने के लिए भेज दिया और इस तरह 1963 के अप्रैल महीने से मैंने बाँसुरी बजाना शुरू किया ।

अगले पाँच-छह साल तक मैं अपने गुरू से नियमित रूप से बाँसुरी वादन सीखता रहा और अभ्यास करता रहा । उसके बाद मैं नियमित रूप से तो गुरूजी के पास नहीं जा सका पर अपने भाई के साथ मैं लगातार इसका अभ्यास करता रहा ।

1974 में मैंने अपने मित्र पी.वी.एस.एस. शास्त्री के साथ आन्ध्रप्रदेश में कई जगहों पर जाकर एकल प्रदर्शन दिए । मेरे मित्र खुद कर्नाटक वोकल के जबरदस्त गायक थे और वे बाद में विजयनगरम में प्रतिष्ठित विजयनगरम महाराज के संगीत महाविद्यालय के प्रिंसीपल भी बने ।

1975 में मैंने कोरोमण्डल फर्टिलाइज़र्स लिमिटेड में नौकरी ज्वाइन कर ली । एक सेल्स प्रमोशन अफसर के रूप में मैं कर्नूल में काम करने लगा ।

जून 1975 में मैं कर्नूल पहुँचा । आज कर्नल में आन्ध्रप्रदेश के सुप्रसिद्ध संगीत विशेषज्ञ पद्मभूषण Dr. श्रीपाद पिनाकपाणि का निवास है ।

कर्नूल पहुँचने के पंद्रह दिन के भीतर ही मैं उन महान संगीत गुरू के सामने जा पहुँचा और अपना परिचय एक संगीत विद्यार्थी के रूप में दिया । वे मेरे समर्पण भाव से प्रभावित हुए और मुझे गंभीरतापूर्वक संगीत शिक्षा देने लगे ।

1975 से 1978 तक मैंने उनके साथ कर्नाटक के संगीत की उच्च शिक्षा ली और अपने बाँसुरी वादन में कई नई चीज़ें जोड़ डालीं और वहीं मैंने गाना भी सीखा और अभ्यास किया ।

1979 में मैंने ध्यान क्षेत्र में कदम रखा और धीरे-धीरे मेरा पूरा ध्यान संगीत से हट कर ध्यान की ओर बढ़ गया । मैंने गुरुजी श्रीपाद पिनाकपाणि के पास जाना भी बंद कर दिया । अब एक ओर था मेरा परिवार और मेरी नौकरी और दूसरी तरफ था ध्यान, आध्यात्मिकता और ध्यान विज्ञान ।

1995 से मैंने अपने ध्यान सेशन के दौरान बाँसुरी बजाना शुरू किया, बीच-बीच में थोड़ा बहुत गाने भी लगा था और इस तरह मैंने गहन ध्यान की अपनी विधि का सूत्रपात किया । वर्ष 2000 से मैंने शास्त्रीय संगीत को भी ध्यान के साथ जोड़ दिया और धीरे-धीरे ऐसा देखा कि संगीत से ध्यान साधना में सुन्दरता भी आती है और सहायता भी मिलती है । ध्यानियों के अनुभवों से यह पता चल रहा था और अब मैं अपने प्रत्येक ध्यान सेशन में गाता भी हूँ और बाँसुरी भी बजाता हूँ । ध्यान में आगे बढ़ने के बाद यह बात बहुत साफ़ नज़र आने लगी, मेरे गाने की शैली में हिन्दुस्तानी म्यूज़िक की कई बातें शामिल हुईं । मेरे गुरु Dr. पिनाकपाणि ने मुझसे पूछा कि तुमने यह हिन्दुस्तानी संगीत कब सीखा । यह श्रेय तो मैं पूर्व जन्मों की अपनी संगीत साधना को ही देता हूँ ।

ध्यान के क्षेत्र में आने से पहले मैं यही सोचता था कि संगीत तो संगीत के लिए ही होता है पर अब मुझे लगता है कि मेरे मामले में तो मेरा संगीत शायद मेरी ध्यानसाधना को आगे बढ़ाने के लिए ही डिज़ाइन हुआ था और मुझे इस बात की बहुत ख़ुशी है ।

नाद ध्यान की जय हो।